Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Dept of Philosophy
R.N. College,
Hajipur

Class — M.A. Semester II
Paper — VI
पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा
(Western Epistemology)

Class — T.D.C. Part I
Paper — II
तत्त्वमीमांसा (Metaphysics) के लिए भी

Topic — बुद्धिवाद (Rationalism)

बुद्धिवाद
(Rationalism)

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में वैज्ञानिक पद्धति से ज्ञान-प्राप्ति पर बहुत अधिक बल दिया गया है। इसमें मध्य युग के विश्वास, श्रद्धा एवं धर्मग्रन्थों पर आधारित ज्ञान की अवहेलना कर बौद्धिक विश्लेषण को महत्व दिया गया है। ज्ञान के स्रोत, सीमा आदि के निर्धारण से यह युग आधुनिक विचारधारा का परिचायक है। इसमें एक विचारधारा बुद्धिवाद (Rationalism) है। बुद्धिवाद एक ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार मनुष्य के वास्तविक ज्ञान का एकमात्र स्रोत बुद्धि है।

बुद्धिवाद की अनेक विशेषताएँ हैं। इस विचारधारा के अनुसार मानव की आत्मा में जन्म से ही कुछ विचार या प्रत्यय प्राप्त होते हैं। जैसे — आत्मा, ईश्वर, कार्य-कारण नियम का प्रत्यय आदि। इसे जन्मजात या सहज प्रत्यय (Innate Idea) कहते हैं। इन जन्मजात प्रत्ययों से यथार्थ ज्ञान की रचना होती है। इसलिए हमारा सम्पूर्ण ज्ञान अनुभव-पूर्व (a priori) होता है। इस यथार्थ ज्ञान को बुद्धि निगमनात्मक एवं अन्तर्निरीक्षण की पद्धति से अभिव्यक्त करती है। जिसप्रकार मकड़ी अपने भीतर से सम्पूर्ण जाल की रचना करती है, वैसे ही बुद्धि जन्मजात प्रत्ययों से समस्त ज्ञान का निर्माण करती है। इस प्रक्रिया में बुद्धि स्वयं सक्रिय, आत्म-चेतन एवं अनुभव-निरपेक्ष होती है। बुद्धि से प्राप्त यह ज्ञान सार्वभौम (Universal) एवं अनिवार्य (necessary) होता है। इस ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। गणित की भाँति बुद्धि से उत्पन्न यह ज्ञान सार्वभौम, अनिवार्य एवं यथार्थ होता है। इसमें तर्क की प्रणाली को आधार मानकर सार्वभौम निष्कर्ष निकाले जाते हैं जो निरीक्षण की पद्धति से सम्भव नहीं है। इसलिए

अनुभव पर आधारित ज्ञान अयथार्थ होता है जो कुछ (Some) के सम्बन्ध में निर्णय देता है, सब (All) के विषय में नहीं देता।

आधुनिक युग में यूरोप के तीन महान दार्शनिक (डेकार्ट, स्पिनोजा एवं लाइबनित्ज) बुद्धिवाद के समर्थक हैं। फ्रांसीसी दार्शनिक रेने देकार्त (Rene Descartes) गणित के असंदिग्ध (Certain) एवं सार्वभौम (Universal) निष्कर्षों से बहुत प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने दर्शन के क्षेत्र में, गणित की भाँति ज्ञान-प्राप्ति का प्रयास किया है। उनका दर्शन गणितशास्त्रीय बुद्धिवाद (Mathematical Rationalism) कहलाता है। उनका कहना है कि इन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान भ्रम एवं संदेह से युक्त है। बुद्धि के द्वारा जन्मजात प्रत्ययों से प्राप्त ज्ञान ही यथार्थ, सार्वभौम एवं अनिवार्य है। इसी आधार पर वे आत्मा, ईश्वर एवं विश्व की सत्ता प्रमाणित करते हैं।

बुद्धिवाद के समर्थकों में दूसरे महत्वपूर्ण दार्शनिक हॉलैण्ड के निवासी बेनेडिक्ट स्पिनोजा (Benedict Spinoza) हैं। उन्होंने ने भी इन्द्रियों पर आधारित ज्ञान को भ्रामक, क्षणिक एवं दुःखदायी बतलाया है। उनका कहना है कि सच्चा ज्ञान मनुष्य की बुद्धि ही दे सकती है। जब मनुष्य सत्य का, ईश्वर एवं आत्मा का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करता है, तभी उसे सच्चा सुख मिलता है।

जर्मनी के रहनेवाले लाइबनित्ज (Leibnitz) इस बुद्धिवादी परम्परा के तीसरे महत्वपूर्ण दार्शनिक हैं। वे भी सहज या जन्मजात प्रत्ययों का समर्थन करते हुए कहते हैं कि कुछ प्रत्यय या विचार ऐसे हैं जिसे अनुभव के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। इनमें सामान्य का प्रत्यय ऐसा है जिसका अनुभव नहीं किया जा सकता, जब तक सामान्य का विचार या प्रत्यय हमारी बुद्धि में पूर्वस्थापित नहीं हो। वे अनुभव के विरोधी नहीं हैं, किन्तु उन्होंने कहा है कि इन्द्रियों से प्राप्त अनुभूतियाँ विशेष घटनाओं की होती हैं। ये घटनाएँ हमारे सुप्त 'सामान्य भावों' को ही जाग्रत करती हैं। उनका

कहना है कि अनुभव एवं बुद्धि दोनों का महत्व है, किंतु सत्य ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि से ही होती है। अनुभव सत्य का ज्ञान न देकर उसकी प्राप्ति में सहायक मात्र है।

समीक्षा — इस विचारधारा में केवल बुद्धि के महत्व को स्वीकार किया गया है, किंतु बुद्धि अकेले ही ज्ञान की रचना नहीं कर सकती। बुद्धिवादी विचारक स्वयं यह निर्धारित नहीं कर पाते कि कौन-कौन से प्रत्यय या विचार सहज हैं। आधुनिक मनोविज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि बुद्धि कभी भी अनुभव-निरपेक्ष नहीं हो सकती।

बुद्धिवाद के इन दोषों के बावजूद इस सिद्धान्त का महत्व है कि इसमें मध्य-काल के अन्ध-विश्वासों को बौद्धिक एवं तार्किक आधार प्रदान किया गया है।

———X———X———